आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 12 अंक : 8 अप्रेल, 2025 मूल्य : ₹2.00

।पशूधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

## मार्गदर्शन : कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित

## कुलपति सन्देश

### खाद्य सुरक्षा एवं पशु स्वास्थ्य के लिए पशुचिकित्सक एक आवश्यक स्वास्थ्यकर्मी: कुलपति

सभी पशुपालक भाईयों को विश्व पशुचिकित्सा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन का विशेष महत्व है। सकल घरेलू कृषि उत्पाद में पशुपालन का 26–30 प्रतिशत योगदान सराहनीय है। छोटे, भूमिहीन तथा सीमान्त किसान जिनके पास फसल उगाने के अवसर सीमित है वे पशुपालन के माध्यम से आय उपार्जित कर जीवनयापन करते हैं। देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि व पशुपालन पर निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन व्यवसाय को गति प्रदान करने में पशुचिकित्सक एक महत्वपूर्ण कड़ी है। विश्व भर में पशुओं, लोगों तथा समुदायों के स्वास्थ्य और कल्याण तथा पशुचिकित्सा पेशे को मान्यता प्रदान करने के लिए प्रतिवर्ष अप्रेल माह के अन्तिम शनिवार को विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाया जाता है। पशुचिकित्सक विश्व भर में पशुओं की निःस्वार्थ भाव से देखभाल करने तथा चोट व बीमारियों से उबरने तथा पशु कल्याण में मदद करने का कठिन कार्य करते हैं। वर्ष 1761 में रॉयल काउसिंल ऑफ स्टेट ने फ्रांस के लियॉन में रॉयल वेटेरनरी कॉलेज की स्थापना की गई, जिसमें छात्रों को पशुओं के इलाज/उपचार करना सिखाना शुरू किया। वर्ष 1863 में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन एडिनवर्ग में किया गया। इसी प्रकार वर्ष 1959 में मैट्रिड में काग्रेस आयोजित कर विश्व पशुचिकित्सा संघ की स्थापना की गई। इस संघ का मुख्य उद्देश्य पशुस्वास्थ्य, कल्याण, पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर ध्यान केन्द्रित करना था। इसी संघ ने वर्ष 2000 में विश्व पशुचिकित्सा दिवस की स्थापना की गई थी। इस वर्ष भी 26 अप्रेल, 2025 को विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाया जा रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी इस दिवस की थीम **''पशु स्वास्थ्य के लिए टीम की आवश्यकता होती है''** होगी। विश्व पशुचिकित्सा संघ ने पशुचिकित्सा सेवाओं को गतिशील प्रकृति पर प्रकाश डालने के लिए इस विषय का चयन किया गया है, जिसके लिए पशु स्वास्थ्य और देखभाल में विविध चुनौतियों का समाधान करने के लिए विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग और सहभागिता की आवश्यकता होती है। एक साथ काम करके पशुचिकित्सक, पशुओं और उनके मालिकों के लिए देखभाल तथा उपचार के उच्चतम मानकों को सुनिश्चित कर सकते हैं। पशु स्वास्थ्य के साथ–साथ जन स्वास्थ्य को भी सुरक्षित रखने में पशुचिकित्सक अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। विश्वविद्यालय को भी अपने विभिन्न केन्द्रों एवं महाविद्यालयों के माध्यम से रेबीज टीकाकरण शिविर तथा पशु स्वास्थ्य शिविर आयोजित कर पशुचिकित्सकों की भूमिका के बारे में किसानों तथा पशुपालकों को जागरूक करना चाहिए।

**आचार्य मनोज दीक्षित**

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

Created by Universal Document Converter

# विश्वविद्यालय समाचार

## शासन सचिव डॉ. समित शर्मा ने किया विश्वविद्यालय की चिकित्सा सुविधाओं का निरीक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में शासन सचिव पशुपालन, गोपालन एवं डेयरी, राजस्थान सरकार डॉ. समित शर्मा ने 26 मार्च को विश्वविद्यालय के क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स का दौरा एवं निरीक्षण किया। प्रति–कुलपति एवं अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि शासन सचिव महोदय ने वेटरनरी महाविद्यालय के विभिन्न शल्य चिकित्सा इकाई में सी.टी. स्कैन, सोनोग्राफी यूनिट, एक्सरे यूनिट, छोटे एवं बडे पशुओं के ऑपरेशन थियेटर का निरीक्षण किया एवं विश्वविद्यालय में चल रही गतिविधियों की जानकारी हासिल की। डॉ. समित शर्मा ने वेटरनरी विश्वविद्यालय में उपलब्ध चिकित्सकीय संसाधन एवं सुविधाओं अधिक से अधिक आमजन में प्रसार एवं प्रचार का सुझाव दिया ताकि अधिक पशुपालक रोगनिदान एवं चिकित्सा पंजीकरण की संख्या में वृद्धि हो और संसाधनों के समुचित उपयोग से ज्यादा से ज्यादा पशुपालकों को चिकित्सकीय सुविधाओं का लाभ मिल सके। डॉ. शर्मा ने वेटरनरी चिकित्सा यूनिटों को सुपर स्पेशलाइजेशन के रूप में विकसित करने का सुझाव भी दिया। पशुचिकित्सा संकुल का भ्रमण निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने करवाया इस दौरान सभी शिक्षक, स्नातकोत्तर एवं पी.एचडी विद्यार्थी उपस्थित रहे। डॉ. शर्मा ने महाविद्यालय में चल रही खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का अवलोकन करते हुए विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहना चाहिए जो कि नियमित खेल–कूद से सम्भव है। डॉ. शर्मा ने कहा कि स्वस्थ मनुष्य ही अपने कार्यों का कुशलतापूर्ण निर्वाहन कर सकता है। डॉ. शर्मा ने विद्यार्थियों से आन्तरिक प्रेरणा को अधिक महत्वपूर्ण बताते हुए कहां कि वो विद्यार्थी ही विजेता बनता है जो स्वतः प्रेरित होता है। निरीक्षण के दौरान विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. हेमंत दाधीच सहित अधिष्ठाता, निदेशक, इकाई प्रभारी एवं शिक्षक मौजूद रहे।

## पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबन्धन एवं निस्तारण विषय पर वेटरनरी विद्यार्थियों ने लिया प्रशिक्षण

बीकानेर, 03 मार्च। पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति छात्र–छात्राओं को पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 3 मार्च को आयोजित किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन के प्रति जागरूगता वर्तमान परिपेक्ष्य में अति आवश्यक हो गई है। विश्वविद्यालय, चिकित्सालयों में कार्यरत कर्मचारियों को एवं पशु चिकित्सा स्नातकोत्तर एवं पशु चिकित्सा वाचस्पति विद्यार्थियों को इसका प्रायोगिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है ताकि वे स्वयं को एवं समाज को संक्रामक बीमारियों के प्रकोप से बचा सके तथा वातावरण को प्रदूषित होने से भी बचा सके। डॉ. वैशाली ने प्रशिक्षणार्थियों को बायोमेडिकल अवशेष के उचित निस्तारण का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया। प्रशिक्षण समापन पर डॉ. बी.एन. श्रृंगी निदेशक अनुसंधान ने विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए।

## पशुओं एवं मुर्गियों में रोग निदान की नवीनतम तकनीकों पर पशुचिकित्सकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के एपेक्स सेंटर द्वारा "पशुओं व मुर्गियों में रोग निदान की नवीनतम तकनीकों" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 3–5 मार्च को आयोजित हुआ। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि पशुचिकित्सकों को विभिन्न संक्रामक बीमारियों के रोग निदान का पूर्ण ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। मुख्य अतिथि ने क्षेत्रीय निदान विधियों के महत्व और पशुचिकित्सा में फीडबैक सिस्टम के उपयोगिता पर भी विचार रखे। उन्होंने प्राचीन पशुचिकित्सा साहित्य जैसे "शालिहोत्र संहिता" और स्थानीय ज्ञान की उपयोगिता पर भी चर्चा की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से पशुचिकित्सकों को पोस्टमार्टम के आधार पर पशुओं में रोग–निदान के विभिन्न तरीकों को समझने का मौका मिलेगा जो कि रोग नियंत्रण में सहायक सिद्ध होगा। समापन समारोह को संबोधित करते हुए वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो हेमन्त दाधीच ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय में रोग निदान की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध है प्रशिक्षणों के माध्यम से हमें नवीन तकनीकों के उपयोग एवं संक्रामक रोग को रोकथाम की विधियों को जानने का मौका मिलता है। इस अवसर पर डॉ. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक अनुसंधान ने बताया कि रोग निदान पर आधारित इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जो तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया उसको अपने कार्यक्षेत्र में भी उपयोग करें। पशुओं में नये–नये संक्रामक बीमारियों देखने को मिल रही है, जिनका त्वरित निदान आवश्यक होना चाहिए ताकि समय पर उपचार किया जा सके और पशुधन को बचाया जा सके। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. गीता बेनीवाल ने बताया कि आने वाला समय आधुनिक पद्धतियों को अपनाने का है, जिससे पशु रोगों के मूल कारण को जानना सुलभ हो गया है। पशुचिकित्सक को नवीनतम् तकनीकों का ज्ञान होना आवश्यक है जो कि इन प्रशिक्षणों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है अतः पशुचिकित्सकों को अपने ज्ञान एवं कौशल को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण लेते रहना चाहिए। प्रशिक्षण के अंत में सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। प्रशिक्षण समन्वयक एवं प्रभारी अधिकारी एपेक्स सेन्टर डॉ. राजेश सिंगाठिया ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी प्रदान की।



Created by Universal Document Converter

## वेटरनरी विश्वविद्यालय ने लिया जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण पर प्रशिक्षण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति छात्र–छात्राओं को पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर 4 मार्च को एक दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन के प्रति जागरूगता चिकित्सकीय कार्य करने वाले विद्यार्थियों में होना अन्यन्त आवश्यक है। निस्तारण में जरा सी लापरवाही बहुत से रोगों को बढ़वा दे सकती है तथा वातावरण को प्रदूषित कर सकती है अतः पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट का उचित प्रबन्ध व निस्तारण किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय, चिकित्सालयों में कार्यरत कर्मचारियों को एवं पशु चिकित्सा स्नातकोत्तर एवं पशु चिकित्सा वाचस्पति विद्यार्थियों को इसका प्रायोगिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है ताकि वे स्वयं को एवं समाज को संक्रामक बीमारियों के प्रकोप से बचा सके तथा वातावरण को प्रदूषित होने से भी रोक सके। डॉ. वैशाली एवं डॉ. बसन्त ने प्रशिक्षणार्थियों को बायोमेडिकल अवशेष के उचित निस्तारण पर व्याख्यान व प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया। प्रशिक्षण समापन पर विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए।

## विवेकानन्द व्याख्यान कक्ष का हुआ उद्घाटन

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर केम्पस परिसर में 8 मार्च को कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित के कर कमलो द्वारा नवनिर्मित विवेकानन्द व्याख्यान कक्ष का हुआ उद्घाटन किया गया। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि महाविद्यालय परिसर में लगभग 100 सीटो की क्षमता वाले नये विवेकानन्द व्याख्यान कक्ष के बन जाने से महाविद्यालय में कांफ्रेंस, मीटिंग, सेमिनार आदि के सुविधाजनक आयोजन हो पायेगा। इस अवसर पर कुलसचिव बी.एल. सर्वा, प्रति कुलपति प्रो. हेमन्त दाधीच, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक पी. एम.ई. प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई, परीक्षा नियन्त्रक प्रो. मनीषा माथुर, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. राहुल सिंह पाल, विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

## अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस का हुआ आयोजन

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 8 मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस "महिलाओं एवं बालिकाओं के लिए: अधिकार, समानता एवं सशक्तिकरण" विषय पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने संबोधित करते हुए कहा कि आजादी काल से अब तक महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। देश में पुरुष एवं महिला के अनुपात में अंतर भी कम हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में यह अनुपातिक अंतर अभी भी ज्यादा है जिसको सुधारने की आवश्यकता है। आज शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा, तकनीकी, अनुसंधान, शासन, प्रशासन आदि ऐसा कोई क्षेत्र नही है जो कि महिलाओं की भागीदारी से अछूता रहा हो। महिलाओं की आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन पूरे समाज और देश के विकास का आधार है। कुलसचिव बी.एल. सर्वा ने कहा कि भारतीय कानून में भी महिलाओं को समानता का अधिकार दिया है जो कि देश के विकास की धूरी है। अधिष्ठाता प्रो. हेमंत दाधीच ने कहा कि पशुपालन क्षेत्र में 75 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी रहती है एवं वेटरनरी प्रोफेशन में भी महिलाओं का रूझान बढ़ा है जो कि महिला सशक्तिकरण का अच्छा उदाहरण है। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने निदेशक पीएमई प्रो. उर्मिला पानू एवं परीक्षा नियंत्रक प्रो. मनीषा माथुर का महिला दिवस पर सम्मान किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक क्लिनिक प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. राहुल सिंह पाल, विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

## सतत बकरी पालन हेतु क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र एवं राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में "सतत बकरी पालन के लिए क्षमता निर्माण : कौशल और ज्ञान संवर्धन" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल समापन हुआ। कार्यक्रम के उद्घाटन संत्र के मुख्य अतिथि प्रति कुलपति प्रो. हेमंत दाधीच ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा बकरी पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण स्तंभ है जो महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने बताया कि आधुनिक तकनीकों एवं वैज्ञानिक प्रबंधन को अपनाकर बकरी पालन को और अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की संपूर्ण रूपरेखा पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इस दौरान प्रशिक्षणार्थियों को बकरी पालन की आधुनिक तकनीकें, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन, आपदा प्रबंधन एवं विपणन रणनीतियों की जानकारी दी। डॉ. सोहेल मोहम्मद ने कार्यक्रम का संचालन किया और प्रशिक्षणार्थियों को बकरी पालन से जुड़ी चुनौतियों और उनके समाधान पर विस्तृत जानकारी दी। केन्द्र के विशेषज्ञ शैलेन्द्र सिंह शेखावत ने बकरी पालन के दौरान संभावित आपदाओं एवं उनके समाधान पर चर्चा की जिससे पशुपालक आपात स्थितियों के लिए पहले से तैयार हो सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जैसलमेर, झालावाड़ और बूंदी जिलों से 47 महिलाएं प्रशिक्षण में भाग लिया।



Created by Universal Document Converter

## विश्वविद्यालय प्रदर्शनी

### एग्री एक्सपो-2025 जोबनेर में प्रदर्शनी का आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय, वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर (जयपुर) में दिनांक 10–11 मार्च को आयोजित दो दिवसीय एग्री एक्सपो–2025 में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल में सैंकड़ों किसानों एवं पशुपालकों ने विभिन्न पशुपालन तकनीकी, देशी गौवंश के संरक्षण एवं चारा उत्पादन के बारे में जानकारी प्राप्त की। प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर ने बताया कि प्रदर्शनी में गौ संवर्द्धन कार्यो, शिक्षा प्रसार, अनुसंधान एवं विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई किसानों एवं पशुपालकों हेतु उपयोगी नवीन तकनीकों एवं गतिविधियों को चार्ट, माडॅल, फ्लेक्स एवं अन्य प्रसार सामग्री के माध्यम से प्रदर्शित की गई। डॉ. किरोड़ी लाल मीणा, माननीय कृषि मंत्री, राजस्थान एवं किसान आयोग के अध्यक्ष श्रीमान सी.आर. चौधरी सहित कई गणमान्य लोगों ने प्रदर्शनी स्थल का अवलोकन किया।

### स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में आयोजित किसान मेला में प्रदर्शनी आयोजित

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में दिनांक 25–27 मार्च, 2025 को किसान मेला–2025 "**सुनियोजित खेतीः सम्पन्न किसान**" थीम पर आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला में प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी आयोजित की गई। विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी में गौ संवर्द्धन कार्यो, शिक्षा प्रसार, अनुसंधान एवं विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई किसानों एवं पशुपालकों हेतु उपयोगी नवीन तकनीकों एवं गतिविधियों को चार्ट, मॉडल, फ्लेक्स एवं अन्य प्रसार सामग्री के माध्यम से प्रदर्शित की गई।

## आजीवन अधिगम एवं एकल स्वास्थ्य विषय पर सेमिनार का हुआ आयोजन

पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के संयुक्त तत्वावधान में 20 मार्च को "आजीवन अधिगम एवं एकल स्वास्थ्य" विषय पर कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित की अध्यक्षता में एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कहा कि भारतीय संस्कृति पुराकाल से ही प्रकृति के समस्त तत्वों एवं जीवो के साथ संतुलित एवं समन्वय के नियम पर चल रही हैं आज पूरा विश्व एकल स्वास्थ्य की अवधारणा की जरूरत को मान रहा है और उस पर मंथन कर रहा है लेकिन भारत के ऋषि–मुनियों ने इस अवधारणा को वर्षों पहले से आचरण में लाने हेतु अमल किया। पशु, मनुष्य, वनस्पति एवं प्रकृति में से किसी एक के असंतुलन के साथ दूसरे के संतुलन की परिकल्पना नहीं कर सकते। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के अध्यक्ष प्रो. एल. राजा ने सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की प्रेरणा देती है। देश के सभी हिस्सो से शिक्षाविद् इस सेमिनार में प्रतिभागी है इस सेमिनार का उद्देश्य प्रौढ़ शिक्षा के महत्व को आम जन तक पहुचाना है। उद्घाटन सत्र में प्रति–कुलपति एवं अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी का स्वागत किया एवं भारत के महाग्रन्थो और स्वास्थ्य एवं प्रकृति के सम्बंध में लिखित ज्ञान का वर्तमान परिपेक्ष्य में महत्व को बताया। सेमिनार में आई.ए.ई.ए. के महासचिव सुरेश खण्डेलवाल ने भी अपने विचार रखे। उद्घाटन सत्र के दौरान अतिथियों ने सेमिनार के ब्रोशर का विमोचन भी किया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन सेमिनार समन्वयक राजेन्द्र जोशी ने किया। कार्यक्रम के दौरान वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, शिक्षक, जिला पी.आर.ओ. हरिशंकर आचार्य, डॉ. उमाकांत गुप्त एवं बीकानेर के जाने–माने शिक्षाविद उपस्थित रहे।

## गौवंश भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला और डेयरी उत्पाद विनिर्माण इकाई का शिलान्यास

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर परिसर में कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित द्वारा गौवंश भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला और डेयरी उत्पाद विनिर्माण इकाई का शिलान्यास किया गया। कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने बताया कि गौवंश भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला के स्थापित हो जाने से देशी गौवंश के उन्नयन और संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा तथा दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी संभव हो सकेगी। डेयरी उत्पाद निर्माण इकाई के बन जाने से विद्यार्थियो को डेयरी के विभिन्न उत्पादों के निर्माण एवं विपणन को सीखने का अवसर मिलेगा जो कि विद्यार्थियों में उद्यमिता को बढ़ावा देगा साथ ही आमजन को भी गुणवत्ता युक्त डेयरी उत्पाद विश्वविद्यालय के माध्यम से उपलब्ध हो पायेंगे। अधिष्ठाता एवं नोडल अधिकारी ई.टी.टी. प्रयोगशाला प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा वित्तिय सहायता से गौवंश भ्रूण प्रत्यारोपण प्रयोगशाला बनकर तैयार होगी जो कि राज्य में देशी गौवंश प्रजनन एवं उत्पादन को बढ़ावा देने में सहायक साबित होगी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली द्वारा वित्तीय सहायता से डेयरी उत्पाद विनिर्माण इकाई की स्थापना विश्वविद्यालय में हो रही है जो कि विद्यार्थियों को दुग्ध उत्पादों के मूल्यसंवर्धन के विभिन्न तरीकों को समझने में सहायक होगी। कार्यक्रम में निदेशक अनुसंधान प्रो. बी.एन. श्रृंगी, आई.सी.ए.आर. नोडल एवं अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक पीएमई प्रो. उर्मिला पानू, परीक्षा नियंत्रक प्रो. मनीषा माथुर, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. पंकज थानवी विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी शिक्षक उपस्थित रहे।



Created by Universal Document Converter

# यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

## गांव कतरियासर में नशा मुक्ति रैली का आयोजन

यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव कतरियासर में डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीछवाल, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा 22 मार्च को स्वयंसेवकों द्वारा नशा मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। रेली का शुभारंभ यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक एवं सहायक आचार्य डॉ. सुनील कुमार और ग्राम पंचायत कतरियासर के सरपंच संतोष देवी व उप–सरपंच कैशू नाथ ने हरी झंड़ी दिखाकर किया। इस अवसर पर डॉ. सुनील कुमार, समन्वयक, यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पांसिबिलिटी ने स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नशा विभिन्न सामाजिक समस्याओं की जड़ है आज के युवाओं को इसकी लत से बचना चाहिए तथा नशा मुक्ति को जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को नशा मुक्ति का संकल्प भी दिलाया। इस शिविर के आयोजन में डॉ. मैना कुमारी, डॉ. दिवाकर झुरिया, सहायक आचार्य, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर ग्राम विकास अधिकारी मिलन कुमार यादव तथा ग्राम वासियों का सहयोग रहा।

## गांव बम्बलू में नशा मुक्ति रैली

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत गोद लिये गांव बम्बलु में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वंयसेवकों द्वारा 22 मार्च, 2025 को नशा मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पांसिबिलिटी की समन्वयक एवं सहायक आचार्य डॉ. मैना कुमारी ने स्वंयसेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नशे की प्रवृति युवाओं में बढ़ती जा रही है जो कि सामाजिक परिवेश के साथ–साथ युवा वर्ग के आर्थिक उत्थान में भी अभिशाप बन गई है। सरकार के साथ–साथ नागरिको के सामूहिक प्रयासों से हम समाज में फैली नशे की प्रवृति को रोक सकते हैं। शिविर के आयोजन में सहायक आचार्य डॉ. सुनील कुमार, डॉ. दिवाकर झुरिया एवं ग्राम विकास अधिकारी श्री रामदेव मंडा सहित ग्रामवासियों का सहयोग रहा।

## जोरजी का खेड़ा में नशा मुक्ति शिविर

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत अंगीकृत गांव जोरजी का खेड़ा में 28 मार्च को नशा मुक्ति शिविर का आयोजन महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. शिव शर्मा के मार्ग–दर्शन में किया गया। डॉ. टीकमचन्द गोयल, सहायक आचार्य एवं समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां ने बताया कि शिविर का आयोजन जोरजी का खेडा गांव के विद्यालय में किया गया जिसमें विद्यार्थियों व ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी दी गई एवं इस संदर्भ में जागरूकता रैली भी निकाली गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीणों को नशे के खतरों के प्रति जागरूक करना और स्वस्थ्य जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना। इस शिविर में महाविद्यालय की यू.एस.आर टीम की सदस्य डॉ. ममता एवं विद्यालय की प्रधानाचार्य सहित अन्य स्टॉफगण, छात्र–छात्राओं तथा ग्रामीणों ने सहयोग दिया।

## रामपुरावास में नशा मुक्ति रैली

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के अंतर्गत डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी (जयपुर) द्वारा अंगीकृत गांव रामपुरावास दूधली में दिनांक 26 मार्च को नशा विरोधी रैली आयोजित की गई। रैली का नेतृत्व डॉ. शफात खान, सहायक आचार्य एवं समन्वयक, यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी, डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी ने किया। रैली का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को नशे और धूम्रपान के हानिकारक दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना और उन्हें स्वस्थ्य जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था। इस रैली में महाविद्यालय के डॉ. खुशाल सोंलकी एवं डॉ. महेन्द्र कुमार, टीचिंए एसोसिएट ने सहयोग दिया।

## खतेपुरा में चिकित्सा शिविर का आयोजन

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर द्वारा 29 मार्च को विश्वविद्यालय सामाजिक दायित्व के तहत गोद लिये गाँव खतेपुरा में पशु जांच एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 24 पशुओं के विभिन्न रोगो का उपचार किया गया। कुछ गाय एवं भैंसों में गर्भावस्था की जांच भी की गयी। शिविर में एक भैंस की ब्रिसिकेट टयूमर का सफलतापूर्वक ऑपरेशन भी किया गया। शिविर में पशुओं के लिए लवण मिश्रण तथा कृमिनाशक दवाओं का मुफ्त वितरण भी किया गया। संस्थान के पशु शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. सुरेश कुमार झीरवाल व डॉ. सत्यवीर सिंह, मेड़िसन विभाग के विशेषज्ञ डॉ. विक्रम सिंह गुर्जर, मादा पशु रोग एवं प्रसुति विभाग के डॉ. अभय कुमार मीणा, स्थानीय पशु चिकित्सालय की पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. बृजेश मीणा तथा संस्थान के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने शिविर में अपनी सेवाऐं प्रदान की। स्थानीय सरंपच जन प्रतिनिधि श्री दीपक कुमार मीणा तथा संस्थान के यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. संजय कुमार रेवानी ने पशु स्वास्थय शिविर के आयोजन में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई।



Created by Universal Document Converter

## गाढवाला में रोगाणुरोधी प्रतिरोध विषय पर जागरूकता शिविर का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग की भारतीय नेटवर्क फॉर फिशरी एंड एनिमल एंटीमाइक्रोबायल रेजिस्टेंस परियोजना के अंतर्गत गांव गाढवाला में 22 मार्च को रोगाणुरोधी प्रतिरोध विषय पर पशुपालकों के लिए जागरूकता शिविर का आयोजन किया। शिविर में किसानों को संबोधित करते हुए परियोजना के प्रमुख अन्वेषक डॉ. राजेश सिंगाठिया ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध के महत्व पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। डॉ. सीताराम गुप्ता ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध को बढ़ावा देने वाली प्रमुख आदतों के बारे में विस्तार से समझाया और पशुपालन में विभिन्न बीमारियों से बचाव के लिए समय पर वैक्सीनेशन कराने की आवश्यकता पर किसानों को जागरूक किया। डॉ. राम कुमार ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध से बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला। इस जागरूकता शिविर में गाढवाला गांव के भागीरथ, रामरख और भीखाराम सहित 25 पशुपालक उपस्थित रहे।

## पशु चिकित्सकों का लैप्रोस्कोपी तकनीको पर प्रशिक्षण संपन्न

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग में पशु चिकित्सकों का तीन दिवसीय लेप्रोस्कोपी तकनीको पर प्रशिक्षण 26 मार्च को सम्पन्न हुआ। यह प्रशिक्षण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.) के अधीन डीमिस्का नेटवर्क प्रोजेक्ट के अंतर्गत आयोजित किया गया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि इस प्रशिक्षण में चिकित्सकों को लैप्रोस्कोपी से संबंधित विभिन्न तकनीकों, स्टरलाइजेशन, बायोप्सी, ऑपरेशन संसाधन, सुचर तकनीको आदि का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया गया। ट्रेनिंग प्रभारी डॉ महेंद्र तंवर ने बताया कि इस प्रशिक्षण में पहले सिम्युलेटर पर प्रैक्टिस करवाई गई और उसके बाद श्वानों में नसबंदी के ऑपरेशन में लैप्रोस्कोपी का प्रशिक्षण करवाया गया। इस प्रशिक्षण में राजस्थान के अतिरिक्त दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, कर्नाटक व पंतनगर के पशुचिकित्सकों ने भाग लिया। डॉ. सकार पालेचा एवं डॉ. अनिल कुमार बिश्नोई प्रशिक्षण के सह–समन्वयक रहे।

# पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

### पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 1, 10, 11, 12 मार्च को गांव बेवड़, टुंडा खेड़ी, सेहला एवं रेजड़ी गांवों में तथा दिनांक .17–22 एवं 24–29 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 1–6 एवं 18–23 मार्च को केन्द्र परिसर में छः दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 6 एवं 18 मार्च को गांव अनगौर एवं पालड़ी–आर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 43 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 4, 7, 10, 11 एवं 12 मार्च को गांव चींसा, बल्लभपुरा, धाकड़खेडी, मण्डानिया, पांचड़ा एवं ढ़ाबा गांवों में तथा 6 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 27 फरवरी–4 मार्च एवं 24–29 मार्च को केन्द्र परिसर में छः दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 6–11, 17–22 एवं 26–31 मार्च को केन्द्र परिसर में छः दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 90 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

### पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 1–6, 17–22 एवं 24–29 मार्च को केन्द्र परिसर में छः दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 90 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 11 एवं 17 मार्च को गांव तोपरियाा एवं करमसाना गांवो में तथा दिनांक 28 फरवरी–1 मार्च, 18–24 मार्च को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 99 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

Created by Universal Document Converter

# भेड़ों और बकरियों में फड़किया रोग

फड़किया या एंटरोटॉक्सिमिया, जिसे ओवरईटिंग डिजीज के नाम से भी जाना जाता है, एक खतरनाक और तीव्र संक्रमण रोग है, जो मुख्य रूप से भेड़ों और बकरियों में पाया जाता है। यह रोग क्लोस्ट्रीडियम पेरफ्रिजेंस नामक बैक्टीरिया द्वारा उत्पन्न होता है। यह बैक्टीरिया आमतौर पर पशु की आंतो में पाए जाते हैं, लेकिन जब पशु अत्यधिक या असामान्य आहार (विशेषकर अधिक स्टार्च वाला भोजन) का सेवन करते हैं, तो यह बैक्टीरिया तेजी से वृद्धि करने लगते हैं और अत्यधिक विषाक्त पदार्थो का उत्पादन करते हैं, जो पशु के शरीर में गंभीर संक्रमण का कारण बन सकते हैं। यह रोग अत्यधिक घातक हो सकता है और यदि समय रहते इलाज न किया जाए तो कई मामलों में अचानक मृत्यु का कारण बन सकता है। इस रोग की पहचान लक्षणों के आधार पर की जा सकती है और इसका इलाज उचित चिकित्सा देखभाल और एन्टिटोक्सीस द्वारा किया जाता है। हालांकि इस रोग से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका उचित आहार नियंत्रण, स्वच्छता और नियमित टीकाकरण है।

**सामान्य लक्षण**

- ❖ इस रोग में कीटाणु विषाक्त पदार्थो का उत्पादन करते हैं, जो पशुओं में शॉक (सदमा) और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी समस्याएं पैदा करते है या फिर आंतो की सूजन और दस्त का कारण बनते हैं।
- ❖ प्रभावित पशु अचानक चारा खाना छोड़ देते हैं और सुस्त हो जाते हैं।
- ❖ पेट में दर्द के लक्षण दिखाते है, जैसे पेट पर लात मारना, बार–बार लेटना–उठना, अपने आगे वाले पैरों पर लेटना, हांफना, इसके अलावा दस्त भी हो सकते हैं, कुछ मामलों में मल में खून भी दिखाई देता है।
- ❖ अधिक गंभीर मामलों में पशु खड़े होने, अपने आगे वाले पैरों पर लेटने, अपने पैरों को फैलाने की क्षमता खो देता है, उनका सिर या गर्दन उनके कंधों के उपर पीछे की तरफ झुक जाते हैं। यह स्थिति मस्तिष्क पर बैक्टीरिया द्वारा उत्पन्न विषाक्त पदार्थो के असर के कारण होती है।
- ❖ यह रोग बहुत खतरनाक होता है और पशुओं की अचानक मृत्यु का कारण बनता है।

**उपचार:**

- ❖ गंभीर मामलों में एंटरोटॉक्सिमिया का उपचार काफी मुश्किल होता है।
- ❖ जब यह रोग बहुत अधिक बढ़ जाता है तो उपचार के परिणाम सीमित हो सकते हैं, हांलाकि शुरूआती लक्षणों पर पशुचिकित्सक की सलाह पर उपचार लेना चाहिए, जैसे दर्द निवारक प्रोबायोटिक्स, इलेक्ट्रोलाइट्स और एंटीसेरा।
- ❖ जब गंभीर स्थिति हो तो उपचार में ज्यादा जटिलताएं होती है। ऐसे मामलों में पशुओं को अंतःशिरा तरल पदार्थ दिए जाते है, ताकि उनके शरीर में पानी और खनिजों का संतुलन बनाए रखा जा सके।
- ❖ इसके अलावा एंटीबायोटिक्स का भी उपयोग किया जा सकता है, जिससे संक्रमण पर काबू पाया जा सके। कुछ मामलों में पशुओं को ऑक्सीजन की आवश्यकता भी हो सकती है, क्योंकि उनकी श्वसन प्रणाली प्रभावित हो सकती है।
- ❖ हालांकि इस रोग के इलाज की बजाय यदि इसे समय से पहले टीकाकारण करके रोका जाए तो पशुओं की मृत्यु दर को बहुत हद तक कम किया जा सकता है। टीकाकरण और उचित आहार प्रबंधन इस रोग से बचने के सबसे प्रभावी उपाय है।

**टीकाकरण:**

- ❖ इस रोग की रोकथाम के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम टीकाकरण है।
- ❖ भेड़ों और बकरियों के लिए कई ऐसे टीके उपलब्ध है जो इस रोग के कीटाणु द्वारा उत्पन्न विषाक्त पदार्थो से रक्षा करते हैं। यह टीकाकरण हर वर्ष मई–जून माह में किया जाना चाहिए।

**आहार प्रबंधन:**

- ❖ प्रत्येक पशु को एक बार में अधिक भोजन देने के बजाय जितना हो सके छोटे–छोटे हिस्सों में भोजन (जैसे तीन से चार बार) देना चाहिए।
- ❖ उच्च जोखिम वाले फीड़ देने से पहले, यह सुझाव दिया जाता है कि पहले पशु को सूखी घास दी जाए, ताकि पशु का पेट पहले से घास से भरा रहे।
- ❖ इस रोग से बचाव के लिए समय–समय पर पशुचिकित्सक की सलाह लेवें।

**डॉ. दीपिका धूड़िया**
**सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

# सफलता की कहानी

## बीना ने सूअर पालन को बनाया आजिविका का साधन

बीना पत्नी श्री मनिद्र सूरतगढ़ जिला श्री गंगानगर की निवासी है। बीना ने सूअर पालन का व्यवसाय शुरू करने का मानस बनाया, परन्तु सूअर पालन का उचित ज्ञान नहीं होने के कारण वह इस व्यवसाय को शुरू नहीं कर पा रही थी। कुछ समय बाद बीना पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के सम्पर्क में आयी और यहां के वैज्ञानिकों से सूअर पालन की उचित जानकारी प्राप्त की इसके बाद इन्होंने सूअर पालन का प्रशिक्षण भी पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से प्राप्त किया। इन्होंने 20 जानवरों से अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया बीना को इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी होने लगी जिससे इन्होंने इस व्यवसाय को ओर आगे बढ़ाने का सोचा। धीरे–धीरे इन्होंने अपने फार्म को ओर बड़ा बना लिया ये पहले जानवरों को अपने क्षैत्र के छोटे व्यापारियों को बेचती थी, परन्तु और अधिक मुनाफे के लिए इन्होंने जानवरों को आगे बेचना शुरू किया जिससे इनकी आमदनी में बढ़ोतरी हुई। बीना ने बताया कि इनके यहां मीट की मांग दिनो दिन बढ़ती जा रही है बीना पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करती रहती है यह अपने जानवरों का समय पर टीकाकरण भी करवाती है। फार्म में अन्य काम जैसे– नवजात बच्चों के दांत काटना, जानवरो का बधियाकरण करना, कृमिनाशक दवाईयां देना आदि कार्य समय–समय पर करवा लेती है। वर्तमान में बीना के पास अपने फार्म पर 125 जानवर है, इसमें से 20 मादा सूअर है। एक मादा सूअर अपने एक ब्यांत में 10 से 15 बच्चों को जन्म देती है बीना अपने इस व्यवसाय से सालाना 08 से 10 लाख रूपये कि आमदनी प्राप्त कर लेती है। बीना अपने इस व्यवसाय से अपने क्षैत्र में अन्य लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई है बीना समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों को अपने फार्म पर बुलाकर अपने क्षैत्र के लोगों को सूअर पालन व्यवसाय की जानकारी भी दिलवाती है बीना अपने इस व्यवसाय से बहुत खुश है वह अपनी इस सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों और पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों को देती है।

**सम्पर्क- बीना पत्नी मनिद**
**सूरतगढ़, जिला–श्रीगंगानगर ( मो.8005708824 )**



Created by Universal Document Converter

## निदेशक की कलम से...

# सतत आजीविका हेतु समेकित कृषि प्रणाली राजस्थान के लिए प्रभावी मॉडल

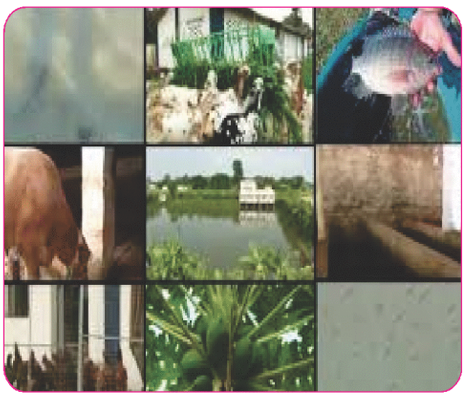

वर्षा आधारित खेती भारत के कृषि परिदृश्य का एक अहम् हिस्सा है, जहां पर लगभग 60 प्रतिशत खेती योग्य भूमि पूरी तरह वर्षा पर निर्भर है। भारत के कुछ प्रदेश जैसे राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में वर्षा आधारित कृषि और सीमित आय जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। राजस्थान में पानी की कमी, कम कृषि उत्पादकता और जलवायु परिवर्तन जैसी प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने में समेकित कृषि प्रणालियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। समेकित कृषि प्रणाली मॉडल जैसे फसल उत्पादन, बागवानी, पशुपालन, कृषिवानिकी और संसाधनों के पुनर्चक्रण का प्रदर्शन पारम्परिक कृषि पद्धतियों की तुलना में 31 गुना अधिक उत्पादकता व 3–6 गुना अधिक लाभ प्रदान करता है, इसके साथ ही पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित कर ग्रामीण आजीविका के नए रोजगार के अवसर उत्पन्न भी करता है। समेकित कृषि प्रणाली ने पशुधन, जलीय, कृषि, बागवानी, कृषि उद्योग व सम्बन्द्ध गतिविधियों की पारम्परिक खेती में क्रांति ला दी है। समेकित जल प्रणाली के तहत वर्षा जल संचयन और क्षेत्र विशिष्ट रणनीतियों को अपनाकर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करके और आय के विभिन्न स्त्रोत बनाकर पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा दिया जा सकता है। समेकित कृषि प्रणाली का मुख्य उद्देश्य सम्बन्धित उद्यमों के साथ–साथ फसलों की गहनता और विविधिकरण के आधार पर प्रति क्षेत्र प्रति समय को अधिकतम करना है, इसके साथ–साथ पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण को सुनिश्चित करती है। वर्ष में अधिक लाभ और रोजगार सृजन के लिए एकीकरण रासायनिक उर्वरक पर निर्भरता को कम करती है। यह प्रणाली शुष्क क्षेत्रों में कृषि, पशुपालन व आजीविका को अधिक टिकाऊ और लाभकारी बनाने में प्रभावी विकल्प प्रदान करती है। समेकित कृषि प्रणाली में एकत्रित वर्षा जल का कुशल उपयोग करते हुए फसल उत्पादन, बागवानी, डेयरी, केंचुआ खाद् और मशरूम, मुर्गीपालन के साथ–साथ उच्च मूल्यों वाले उद्यमों जैसे फल, ककड़ी, खरबूजा, काचरी टिण्डें की खेती और पशुपालन को समावेशित कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार समेकित कृषि प्रणाली किसानों व पशुपालकों को सशक्त बनाने में सक्षम है, बल्कि सीमित संसाधनों व क्षेत्रों को आजीविका सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजस्थान जैसे शुष्क प्रदेश में समेकित कृषि प्रणाली पानी की कमी, कम उत्पादकता और जलवायु परिवर्तन जैसी प्रमुख चुनौतियों का समाधान भी है। इस प्रकार पशुपालक व किसान भाई समेकित कृषि प्रणाली अपनाकर उपरोक्त चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं तथा अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं।

**प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर**


''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224



मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) हेमन्त दाधीच
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।


बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ( डॉ. ) हेमन्त दाधीच द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ( डॉ. ) हेमन्त दाधीच



Created by Universal Document Converter